Introduction

# परिवर्तित जीवन मूल्यों के संदर्भ में साठोत्तरी हिन्दी की हास्य व्यंग्य कविताओं का मूल्यांकन

अपने एम.ए. के अध्ययन काल से ही मैं हिन्दी के व्यंग्यकारों की रचनाएँ पढ़ती रही हूँ। अन्य विधाओं की अपेक्षा मुझे व्यंग्य लेखन में अधिक सार्थकता तथा चिन्तन के अनेक विस्तार अनुभव हुए हैं। विशेषकर हरिशंकर परसाई, शरद जोशी तथा लतीफ घोघी तथा ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य लेखन ने मुझे प्रभावित किया साथ ही हास्य रचनाएँ भी प्रभावित करती रही।

सन् 2001 में बुन्देलखण्ड यूनिवर्सिटी से एम.ए. करने के बाद मुझे बड़ौदा रहना पड़ा अपनी व्यंग्य पाठ्य रुचि के कारण मेरा साक्षात्कार म.स. विश्वविद्यालय बड़ौदा के रीडर डॉ. भगवानदास कहार से हुआ। मैंने जब व्यंग्य और हास्य में अपनी रुचि प्रदर्शित करते हुए पी.एच.डी की जिज्ञासा व्यक्त की तो उन्होंने तुरंत अपने निर्देशन में मेरा पंजीकरण करा दिया और मैंने कार्य भी प्रारम्भ कर दिया।

संयोगवश कुछ पारिवारिक व्यवधानों के कारण शोधकार्य में विलम्ब हुआ और डॉ. कहार सेवा निवृत्त भी हो गए, मेरा शोध कार्य पूर्ण रूप से रुक गया।

बाद में वर्तमान हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी से मैं मिली और उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार करके मुझे मार्गदर्शन देने का दायित्व स्वीकार कर लिया।

मैंने बड़े मनोयोग से डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के निर्देशन में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और उन्हीं के कुशल निर्देशन के कारण आज मेरा यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका है।

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में सभी विधाओं का प्रारम्भ तथा विकास हुआ। सभी विधाओं पर अनेक शोध कार्य हुए परन्तु हास्य-व्यंग्य साहित्य कुछ उपेक्षित-सा रहा गया। इस विषय पर बहुत कम शोध कार्य हुए। वैसे तो कबीर के युग से ही हास्य-व्यंग्य का विकास होता रहा है। शुरु से ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में हास्य-व्यंग्य का विकास छुटपूट रूप में होता आया है परन्तु स्वतंत्रता के बाद हास्य-व्यंग्य काव्य लेखन स्वतंत्र रूप से विकसित होने लगा।

आज हास्य-व्यंग्य का अपना अलग क्षेत्र बन गया है और इस विषय पर शोध कार्य करने की मेरी बहुत इच्छा थी। हास्य-व्यंग्य साहित्य की व्यापकता को समेटना बहुत कठिन कार्य लगा। परन्तु निरन्तर कार्य में लगे रहकर डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के निर्देशन से पूर्ण हो सका सम्पन्न प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है।

**प्रथम अध्याय में** हास्य-व्यंग्य विषय के शास्त्रीय अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। हास्य-व्यंग्य परिभाषा, उत्पत्ति, भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से परिभाषा; स्वरूप हास्य-व्यंग्य के तत्व आदि को स्पष्ट किया गया है।

**द्वितीय अध्याय में** हास्य-व्यंग्य काव्य की धारा को परिवर्तित मानव मूल्यों के तहत विवेचित करके विवेच्य दृष्टिकोण को विस्तार से प्रस्तुत किया है।

**तृतीय अध्याय में** हास्य-व्यंग्य काव्य के प्रमुख हस्ताक्षरों का परिचय दिया है।

**चतुर्थ अध्याय में** हास्य-व्यंग्य रचनाओं में राजनैतिक दृष्टिकोण को देखते हुए राजनैतिक भ्रष्टाचार, विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को उजागर किया है।

**पंचम अध्याय में** सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारिवारिक क्षेत्र में फैलती हुई असमानताओं एवं अव्यवस्थाओं को हास्य-व्यंग्य काव्य के द्वारा वर्तमान संदर्भों में विवेचना प्रस्तुत की गई है।

**षष्ठ अध्याय में** आर्थिक, शैक्षणिक एवं साहित्यिक क्षेत्र में फैलती विषमताओं को हास्य-व्यंग्य काव्य के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

**सप्तम अध्याय में** हास्य-व्यंग्य काव्य में भाव एवं कलापक्षीय वैशिष्टय को स्पष्ट किया गया है।

**अष्टम अध्याय में** मूल्यांकन किया गया है तथा उपसंहार समायोजित है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मुझे आवश्यक सामग्री महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा और लखनऊ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों और जीवन प्रभात प्रकाशन मुम्बई, हिन्दी साहित्य निकेतन बिजनौर, सार्थक प्रकाशन दितली, साहित्य संगम इलाहाबाद आदि स्थानों से प्राप्त हुई जिसके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ।

इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे गुरू डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी हिन्दी विभागाध्यक्ष महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा का पूर्ण निर्देशन प्राप्त हुआ और विभाग के डॉ. भगवानदास कहार, डॉ. शैलजा भारद्वाज आदि का सहयोग मिलता रहा। मैं इनकी आभारी हूँ।

इस शोधकार्य को पूरा करने और हमेशा प्रोत्साहन देने में मेरे पिता डॉ. रमेश चन्द्र खरे माँ श्रीमती मनोरमा खरे का प्रोत्साहन मिलता रहा। इनके लिए मैं सदैव आभारी रहूँगी। मेरे छोटे भाई प्रकाश चन्द्र खरे, दीपेश खरे और घर के सभी सदस्यों का हमेशा सहयोग रहा। मेरी शादी होने के बाद इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे ससुराल के सदस्यों ने और मेरे पति ने हमेशा पर्याप्त सहयोग दिया है। उसके लिए मैं उनकी चिर ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध सर्वथा मौलिक स्थापनाओं एवं विचारों से सम्पन्न है मैंने अनेक अधिकारी विद्वानों तथा सहयोगियों से इस संदर्भ में जानकारी प्राप्त की है। प्रत्यक्ष या परोक्षरूप में जिन-जिन साहित्यकारों तथा अधिकारियों का सहयोग मुझे मिला है मैं उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

- करुणा खरे